गुणायतन ...एक परिचय

जैन दर्शन के अनुसार आत्मा ही परमात्मा है। प्रत्येक आत्मा अनन्त शक्तियों का पिण्ड है। किसी आत्मा में आत्म शक्तियाँ पूर्ण प्रकट होती हैं तो किसी में कम। जैसे काली अंधियारी सघन घटाएँ सूर्य के प्रकाश को मन्द कर देती हैं। वैसे ही कर्मावरण की सघन घटाएँ आत्म शक्तियों को प्रभावित कर देती हैं। जैसे-जैसे मेघ घटाएँ विरल होती हैं सूर्य का प्रकाश और प्रताप बढ़ने लगता है। मेघ घटाओं के पूर्ण नष्ट होने पर सूर्य का प्रकाश और प्रताप पूर्णतः प्रकट हो जाता है। वैसे ही जैसे-जैसे कर्मावरण की घटाएँ क्षीण होती हैं आत्मशक्तियों का प्रकाश बढ़ने लगता है तथा कर्मावरण के पूर्ण नष्ट होने पर आत्मशक्तियों की पूर्ण अभिव्यक्ति हो जाती है। यही परमात्मा अवस्था है। इन्हें ही भगवान अर्हन्त अथवा तीर्थंकर कहते हैं।

जैनदर्शन में आत्मशक्तियों के विकास के क्रमिक सोपानों को चौदह गुणस्थानों द्वारा बहुत सुन्दर ढंग से विवेचित किया गया है। ''गुणस्थान'' जैनदर्शन का एक विशिष्ट पारिभाषिक शब्द है। जैनदर्शन के अनुसार जीव के आवेग-संवेगों और मन वचन काय की प्रवृत्तियों के निमित्त से उसके अन्तरंग भावों में उतार-चढ़ाव होता रहता है। जिन्हें गुणस्थानों द्वारा बताया जाता है। गुणस्थान जीव के भावों को मापने का पैमाना है। यह जीव के अनतरंग परिणामों में होने वाले उतार-चढ़ाव का बोध कराता है। साधक कितना चल चुका है और तिना आगे उसे और चलना है गुणस्थान इस यात्रा को बताने वाला माग्र सूचक पट्ट है। गुण स्थानों के माध्यम से ही जीव की मोह और निर्मोह दशा का पता चलता है। इससे ही संसार और मोक्ष के अन्तर का पता चलता है। कुल मिलाकर आत्मा से परमात्मा तक की शिखर यात्रा में होने वाले आत्म विकास की सारी कहानी हमें गुणस्थानों द्वारा पता चलती है। समग्र जैन तत्वज्ञान और कर्मसिद्धांत का विवेचन इन्हीं गुणस्थानों द्वारा किया जाता है।

जैन सिद्धान्तों की वैज्ञानिक प्रयोगशाला : गुणायतन

आधुनिक वैज्ञानिक तकनीक एनीमेशन प्रकाश/ध्वनि और संगीत से चमकेगा गुणायतन। बोलता हुआ देखेंगे समवशरण

गुणायतन क्या ?

जैन दर्शन के इन्हीं चौदह गुणस्थानों को सुन्दर/आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए हम एक विशिष्ट योजना को मूर्त रूप देने जा रहे हैं। यह योजना एक अभिनव योजना है। गुणायतन के नाम से बनने जा रहा यह धर्मायतन जैनधर्म के परम्परागत मंदिरों/धर्मायतनों से एकदम अलग एक अद्‌भुत ज्ञानमंदिर होगा। संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के पावन आशीष तथा मुनिवर श्रीप्रमाणसागर जी महाराज की प्रेरणा और परिकल्पना से बनने जा रहे इस धर्मायतन में एनिमेशन और मॉडल्स के माध्यम से आत्म विकास के क्रमिक सोपानों को सुन्दर ढंग से दिग्दर्शित कराया जायेगा। शब्द, संगीत और प्रकाश से युक्त यह परियोजना दर्शकों के भरपूर मनोरंजन के साथ जैन कला और स्थापत्य का उत्कृष्ट नमूना बनेगा, साथ ही जैन तत्वज्ञान के प्रचार का आधार भी होगा। आत्मा से परमात्मा बनने की जीवन्त झाँकियों के साथ संसारी जीवों की विभिन्न भूमिकाओं के अनुरूप उनके चिन्तन और चर्या का भी सहज बोध प्राप्त होगा। इसकी परिकल्पना कुछ इस प्रकार की है कि साधारण से साधारण जैन-अजैन व्यक्ति इसे सहजता से समझ सकेंगे और मनोरंजन के साथ जैन धर्म के मर्म को जान सकेंगे।

गुणायतन क्यों?

तीर्थराज सम्मेद शिखर जैनियों का शिरोमणि तीर्थ है। यहाँ प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु/पर्यटक आते हैं। इतने बड़े तीर्थस्थल पर दिगम्बर जैन समाज का मंदिरों के अतिरिक्त ऐसा कुछ भी नहीं है जो यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं/पर्यटकों को आकर्षित कर उन्हें जैन धर्म का बोध करा सके। इसी अभाव की पूर्ति के लिए गुणायतन का निर्माण किया जा रहा है। यह ज्ञान मंदिर यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं/पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बन सम्मेदशिखर के विकास में भी मील का पत्थर बनेगा।

मन्दिर के अन्दर.... विशेष आकर्षण

- एनीमेशन/होलोग्राम/11D अनुभव युक्त थिएटर, 270° प्रक्षेपण आदि आधुनिकतम तकनीक के माध्यम से शब्द/संगीत और प्रकाश युक्त यथार्थ पूर्ण अदभुत अनुभूति।
- जैन दर्शन में प्रतिपादित चौदह गुणस्थानों की अद्वितीय प्रस्तुति।
- आत्मा से परमात्मा तक की सम्पूर्ण जीवन्त झाँकी
- मिथ्या दृष्टि से सिद्ध-अवस्था तक की अनुपम यात्रा।
- कैसे होता है केवलज्ञान।
- बोलता हुआ समवशरण।
- भगवान का श्री विहार और मोक्ष गमन।
- पत्थरों से बना श्री सम्मेद शिखर जी में पंचायतन शैली का प्रथम कलात्मक विशाल मंदिर।
- श्री सम्मेद शिखर जी में सर्वाधिक प्राचीन अतिशय युक्त जिनबिम्ब।

हमारी योजनायें

क्षेत्र पर जिन मन्दिर के अतिरिक्त यात्री निवास, सन्त निवास, श्रुत मन्दिर, भोजनशाला और सल्लेखना भवन के साथ विशाल आधुनिक सज्जायुक्त सभागार (आडिटोरियम) की योजना भी प्रस्तावित है।

आप से सानुरोध निवेदन है कि आप हमारी विभिन्न योजनाओं से जुड़कर इस विशाल धर्मायतन के निर्माण में सहभागी बनें और पुण्यार्जन करें।

भावी योजनायें

- उत्कृष्ट पंचायतन शैली का भव्य जिन मन्दिर
- विशाल आधुनिक सज्जा युक्त सभागार (ओडिटोरियम)
- संत निवास
- सर्व सुविधायुक्त यात्री निवास
- श्रुत मन्दिर (कम्प्यूटराइज्ड लाइब्रेरी रिसर्च सुविधा सहित)
- ध्यान मन्दिर (आत्म साधना केन्द्र)
- भोजनशाला (राजा श्रेयांस अक्षुण्ण भोजनशाला)
- सल्लेखना भवन

परम पूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की 50वीं दीक्षा जयंती के उपलक्ष्य में गुणायतन परिसर में 151 फिट ऊँचा, 1008 अर्हन्त प्रतिमाओं सहित कीर्ति स्तम्भ

गुणायतन में बोलेगा समवशरण

जब-जब आगम पढ़ते हैं तो तब-तब सोचते हैं -

- काश ! हम भी होते समवशरण में
- सुनते भगवान की दिव्य ध्वनि
- देखते तीर्थंकरों का श्रीविहार
- सीखते सौधर्म की भक्ति
- झुकते देखते शतेन्द्र
- जानते अपने सातो भव
- पहचानते अपने गुणस्थान

इन्हीं भावनाओं की साकारता को आकार दे रहा है गुणायतन।